वर्ष 15 अंक 320 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, बुधवार 24 नवम्बर 2021
कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित
RNI N.UPHIN/2007/27090
दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....

कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में बौद्धिक संपदा अधिकार कार्यक्रम संपन्न

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में कास्ट एनसी परियोजना के अंतर्गत कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में बौद्धिक संपदा अधिकार- आत्मनिर्भर भारत एक परिपक्व नवाचार प्रणाली की ओर विषय पर कार्यक्रम आयोजित गया। जिसमें राष्ट्रीय आभासी व्याख्यान के मुख्य अतिथि सह-व्याख्यानकर्ता ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ सी एल मौर्य प्राध्यापक/आयोजन सचिव, डॉ हर ज्ञान प्रकाश निदेशक शोध/ सह मुख्य अन्वेषक तथा संपूर्ण भारतवर्ष के 125 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। निदेशक शोध डॉ हर ज्ञान प्रकाश ने मुख्य अतिथि तथा समस्त प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय में हो रहे नित्य नवाचार से अवगत कराया। कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ मौर्य ने बौद्धिक संपदा अधिकार का परिचय देते हुए विभिन्न प्रकार के बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। नित्य नए नवोन्मेष अविष्कारों से देश तकनीकी रूप से उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। बौद्धिक संपदा अधिकारों से देश में वित्तीय विकास की अपार संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। बौद्धिक संपदा अधिकारों को प्रदान करने से नए शोधकर्ताओं तथा शोध एवं विकास को विभिन्न क्षेत्रों में नवोन्मेषी आविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित होते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार नवोन्मेषी तकनीकी को सार्वजनिक क्षेत्र में रहता प्राप्त हो जाती है तो बड़े पैमाने पर उसका उत्पादन होता है,जिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं इस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था में बौद्धिक संपदा का गुणांक प्रभाव दिखाई पड़ता है दूसरे शब्दों में कहें तो बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण भारत को आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध हो रही है। वास्तव में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं व्याख्यान करता पूर्व सहायक निदेशक (बौद्धिक संपदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध) डॉ शशांक मौर्य ने बौद्धिक संपदा

अधिकारों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर परिचर्चा की। साथ ही उन्होंने चिंता व्यक्त की, कि आज शोध एवं शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ 0.05त्र धनराशि व्यय की जा रही है। जबकि बहुत से अन्य विकसित देशों में 4त्र से अधिक की धनराशि आवंटित की जाती है। उन्होंने कहा कि यदि शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देना है तो नीतिगत परिवर्तन करने होंगे। उन्होंने उत्कृष्ट शोध के वृद्धि एवं विकास हेतु सहायक नीतियों का निर्धारण,स्वस्थ विकास एवं उन्नति के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रतिबद्धताओं का सम्मान किया जाना,अंतरराष्ट्रीय विकास को समझना भी जरूरी, प्रबंध तंत्र की सराहना की जरूरत सार्वजनिक संस्थानों में बौद्धिक शक्ति का कुशल प्रबंधन संचालित करने की स्वतंत्रता के साथ एक प्रौद्योगिकी समीकरण प्रणाली की आवश्यकता जमीनी स्तर के नवोन्मेष की खोज करना और उन्हें दिशा देना विभिन्न क्षमताओं के लिए ज्ञान हस्तांतरण के लिए अनुरूप नीतियां सांस्कृतिक संस्था गत और वित्तीय समस्याओं की विभिन्न परतों को संबोधित करना बौद्धिक संपदा प्रेमी गांव के बड़े सपने देखने जैसे विषयों पर गहन एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों के प्रश्नों तथा उत्सुकता का बखूबी उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा का समाधान किया प्रशिक्षण आयोजक मंडल के सदस्य डॉ श्वेता ने सत्र का संचालन किया तथा डॉ राजीव ने समस्त अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया कार्यक्रम में पारस कुशवाहा,डॉक्टर खलील खान, राजकुमार, सुबोध उपस्थित रहे।

WORLD खबर EXPRESS
WORLD खबर एक्सप्रेस
कानपुर
मंगलवार, 23-11-2021
04

अविष्कारों से तकनीकी रूप से उन्नति कर रहा देश

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में 'बौद्धिक संपदा अधिकारः आत्मनिर्भर भारत एक परिपक्व नवाचार प्रणाली' विषय पर हुआ कार्यक्रम

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कास्ट एनसी परियोजना के अंतर्गत कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में 'बौद्धिक संपदा अधिकारः आत्मनिर्भर भारत एक परिपक्व नवाचार प्रणाली' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय आभासी व्याख्यान के मुख्य अतिथि सह-व्याख्यानकर्ता ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ. सीएल मौर्य प्राध्यापक/आयोजन सचिव, डॉ. हर ज्ञान प्रकाश निदेशक शोध/ सह मुख्य अन्वेषक तथा देश के 125 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

निदेशक शोध डॉ. हर ज्ञान प्रकाश ने मुख्य अतिथि तथा समस्त प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय में हो रहे नित्य नवाचार से अवगत कराया। कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ. मौर्य ने बौद्धिक संपदा अधिकार का परिचय देते हुए विभिन्न प्रकार के बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। नित्य नए नवोन्मेष अविष्कारों से देश तकनीकी रूप से उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। बौद्धिक संपदा अधिकारों से देश में वित्तीय विकास की अपार संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। बौद्धिक संपदा अधिकारों को प्रदान करने से नए शोधकर्ताओं, शोध तथा विकास को विभिन्न क्षेत्रों में नवोन्मेशी आविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित होते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार नवोन्मेषी तकनीकी को सार्वजनिक क्षेत्र में रहता प्राप्त हो जाती है तो बड़े पैमाने पर उसका उत्पादन होता है जिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था में बौद्धिक संपदा का गुणांक प्रभाव दिखाई पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण भारत को आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध हो रही है। वास्तव में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं व्याख्यान करता पूर्व सहायक निदेशक (बौद्धिक संपदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध) डॉ. शशांक मौर्य ने बौद्धिक संपदा अधिकारों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर परिचर्चा की।

साथ ही उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आज शोध एवं शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ 0.05 फीसदी धनराशि व्यय की जा रही है जबकि बहुत से अन्य विकसित देशों में 4 फीसदी से अधिक की धनराशि आवंटित की जाती है। उन्होंने कहा कि यदि शोध व नवाचार को बढ़ावा देना है तो नीतिगत परिवर्तन करने होंगे। उन्होंने उत्कृष्ट शोध के वृद्धि व विकास के लिए सहायक नीतियों का निर्धारण, स्वस्थ विकास एवं उन्नति के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रतिबद्धताओं का सम्मान किया जाना, अंतरराष्ट्रीय विकास को समझना भी जरूरी, प्रबंध तंत्र की सराहना की जरूरत, सार्वजनिक संस्थानों में बौद्धिक शक्ति का कुशल प्रबंधन संचालित करने की स्वतंत्रता के साथ एक प्रौद्योगिकी समीकरण प्रणाली की आवश्यकता, जमीनी स्तर के नवोन्मेष की खोज करना और उन्हें दिशा देना सहित कई विषयों पर गहन व सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों के प्रश्नों तथा उत्सुकता का बखूबी उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा का समाधान किया। प्रशिक्षण आयोजक मंडल की सदस्य डॉ. श्वेता ने सत्र का संचालन किया तथा डॉ. राजीव ने अतिथियों और प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में पारस कुशवाहा, डॉ. खलील खान, राजकुमार, सुबोध आदि रहे।

दीनार टाइम्स
कानपुर न्यूज
www.dinartimes.in
9
कानपुर, मंगलवार, 23 नवंबर 2021

बौद्धिक संपदा से देश में विकास की अपार संभावनाएं

कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में बौद्धिक संपदा अधिकार कार्यक्रम संपन्न

डीटीएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में कास्ट एनसी परियोजना के अंतर्गत कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में बौद्धिक संपदा अधिकार आत्मनिर्भर भारत एक परिपक्व नवाचार प्रणाली की ओर विषय पर कार्यक्रम आयोजित गया। जिसमें राष्ट्रीय आभासी व्याख्यान के मुख्य अतिथि सह-व्याख्यानकर्ता ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ सी एल मौर्य प्राध्यापक आयोजन सचिव, डॉ हर ज्ञान प्रकाश निदेशक शोध सह मुख्य अन्वेषक तथा संपूर्ण भारतवर्ष के 125 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। निदेशक शोध डॉ हर ज्ञान प्रकाश ने मुख्य अतिथि तथा समस्त प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय में हो रहे नित्य नवाचार से अवगत कराया। बौद्धिक संपदा से विकास की देश में अपार संभावनाएं हैं।

बौद्धिक संपदा के अधिकारों का संरक्षण जरुरी

कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ मौर्य ने बौद्धिक संपदा अधिकार का परिचय देते हुए विभिन्न प्रकार के बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण से प्रतिभागियों को अवगत कराया। नित्य नए नवोन्मेष अविष्कारों से देश तकनीकी रूप से उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है।बौद्धिक संपदा अधिकारों से देश में वित्तीय विकास की अपार संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। बौद्धिक संपदा अधिकारों को प्रदान करने से नए शोधकर्ताओं तथा शोध एवं विकास को विभिन्न क्षेत्रों में नवोन्मेशी आविष्कार करने

के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित होते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार नवोन्मेषी तकनीकी को सार्वजनिक क्षेत्र में रहता प्राप्त हो जाती है तो बड़े पैमाने पर उसका उत्पादन होता है जिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं इस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था में बौद्धिक संपदा का गुणांक प्रभाव दिखाई पड़ता है दूसरे शब्दों में कहें तो बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण भारत को आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध हो रही है वास्तव में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

शोध और शिक्षा पर जीडीपी का सिर्फ 0.5 प्रतिशत खर्च हो रहा

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं व्याख्यान करता पूर्व सहायक निदेशक (बौद्धिक संपदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध) डॉ शशांक मौर्य ने बौद्धिक संपदा अधिकारों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर परिचर्चा की। साथ ही उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आज शोध एवं शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ 0.05ब धनराशि व्यय की जा रही है। जबकि बहुत से अन्य विकसित देशों में 4ब से अधिक की धनराशि आवंटित की जाती है। उन्होंने कहा कि यदि शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देना है तो नीतिगत परिवर्तन करने होंगे। उन्होंने उत्कृष्ट शोध के वृद्धि एवं विकास हेतु सहायक नीतियों का निर्धारण,स्वस्थ विकास एवं उन्नति के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रतिबद्धताओं का सम्मान किया जाना,अंतरराष्ट्रीय विकास को समझना भी जरूरी, प्रबंध तंत्र की सराहना की जरूरत सार्वजनिक संस्थानों में बौद्धिक शक्ति का कुशल प्रबंधन संचालित करने की स्वतंत्रता के साथ एक प्रौद्योगिकी समीकरण प्रणाली की आवश्यकता जमीनी स्तर के नवोन्मेष की खोज करना ।

बौद्धिक संपदा प्रेमी गांव के बड़े सपने देखते

उन्हें दिशा देना विभिन्न क्षमताओं के लिए ज्ञान हस्तांतरण के लिए अनुरूप नीतियां सांस्कृतिक संस्था गत और वित्तीय समस्याओं की विभिन्न परतों को संबोधित करना बौद्धिक संपदा प्रेमी गांव के बड़े सपने देखने जैसे विषयों पर गहन एवं सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों के प्रश्नों तथा उत्सुकता का बखूबी उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा का समाधान किया प्रशिक्षण आयोजक मंडल के सदस्य डॉ श्वेता ने सत्र का संचालन किया तथा डॉ राजीव ने समस्त अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।कार्यक्रम में पारस कुशवाहा,डॉक्टर खलील खान, राजकुमार , सुबोध उपस्थित रहे।

कानपुर। बुधवार • 24 नवम्बर • 2021
राष्ट्रीय सहारा

शिक्षा में शोधन्नवाचार को बढ़ावा देने को नीतिगत परिवर्तन जरूरी

कानपुर (एसएनबी)। पूर्व सहायक निदेशक (वौद्धिक संपदा एवं प्रौद्योगिकी प्रवंधन तथा अंतरराष्ट्रीय संवंध) डॉ. शशांक मौर्य ने इस पर चिंता जताई है कि देश में शोध एवं शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ 0.05 प्रतिशत धनराशि व्यय की जा रही है। जवकि वहुत से अन्य देशों में 4 प्रतिशत से अधिक धनराशि आवंटित की जाती है। उन्होंने कहा कि यदि शोध व नवाचार को वढ़ावा देना है तो नीतिगत परिवर्तन करने होंगे।

डॉ.शशांक सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में मंगलवार को कास्ट एनसी परियोजना के अंतर्गत ' कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में वौद्धिक संपदा अधिकार 'आत्मनिर्भर भारत एक परिपक्व नवाचार प्रणाली की ओर' विषयक कार्यक्रम को वतौर मुख्य अतिथि संवोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम का ऑनलाइन शुभारंभ करते हुए आभासी व्याख्यान दिये। प्रतिभागियों को वौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण से अवगत कराया गया। वताया गया कि वौद्धिक संपदा अधिकारों से देश में वित्तीय विकास की अपार संभावनाएं विकसित हो रही हैं। यह भारत को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

विवि के निदेशक शोध डॉ.एचजी प्रकाश व आयोजन सचिव डॉ.सीएल मौर्य ने वताया कि कार्यक्रम में देशभर से 125 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण आयोजक मंडल की सदस्य डॉ. श्वेता के संचालन में संपन्न कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन डॉ.राजीव ने किया। पारस कुशवाहा, डॉ.खलील खान, राजकुमार, सुवोध आदि उपस्थित रहे।